eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 6, Issue 02, July 2023

शिक्षक–छात्र सम्बन्धों पर सोशल–नेटवर्किंग साइट्स के प्रभाव का अध्ययन

[1]प्राची विजय
[2]डॉ0 ओमकार चौरसिया
[1]शोधार्थी, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी
[2]प्रोफेसर, शिक्षक शिक्षा विभाग, पं0 जे0 एल0 एन0 कॉलेज, बॉदा उ0प्र0

Received: 20 June 2023 Accepted: 28 June 2023, Published with Peer Reviewed on line: 31 July 2023

Abstract

आज की दुनिया डिजिटल जगत में बहुत आगे बढ़ रही है और इसका असर शिक्षा क्षेत्र में भी देखा जा सकता है। सोशल नेटवर्किंग साइट्स ने भी शिक्षा के क्षेत्र में अपना प्रभाव दिखाया है। आज के छात्रों के लिए सोशल नेटवर्किंग साइट्स ने उनके जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। सोशल नेटवर्किंग साइट्स के उपयोग से छात्र अपने दोस्तों और परिवार के साथ जुड़ सकते हैं, नए लोगों से मिल सकते हैं, अपनी रुचियों को विस्तार कर सकते हैं और अपनी सोच का विस्तार कर सकते हैं। इसके अलावा शिक्षकों के लिए भी सोशल नेटवर्किंग साइट्स का उपयोग शिक्षा क्षेत्र में जागरूकता फैलाने के लिए किया जाता है। यहां हम शिक्षक छात्र संबंधों पर सोशल नेटवर्किंग साइट्स के प्रभाव का अध्ययन करेंगे।

मुख्य शब्द– शिक्षा, शिक्षक–छात्र सम्बन्ध, सोशल–नेटवर्किंग साइट्स, प्रभाव एवं अध्ययन।

Introduction

शिक्षा एक ऐसा क्षेत्र है जो समाज की स्थिति, विकास और संघर्षों को परिभाषित करता है। शिक्षा वास्तव में एक स्थिर और निरंतर अभिवृद्धि प्रक्रिया है जो हमें ज्ञान, उम्मीद और अनुभव से भर देती है। शिक्षा आज की दुनिया में बहुत महत्वपूर्ण हो गई है और यह समाज के विकास में एक अहम भूमिका निभाती है। आधुनिक टेक्नोलॉजी की दुनिया में सोशल नेटवर्किंग साइट्स एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। सोशल नेटवर्किंग साइट्स छात्रों के लिए लगातार नई शैक्षिक संभावनाएं विकसित कर रही हैंद्य सोशल नेटवर्किंग साइट्स का यदि शैक्षिक दृष्टि से अध्ययन किया जाए तो यह ज्ञान को बढ़ाने में काफी हद तक कारगर सिद्ध हुई हैंद्य आज के दौर में सोशल नेटवर्किंग साइट्स न केवल लोगों को एक साथ जोड़ती हैं, बल्कि शिक्षा क्षेत्र में भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। सोशल नेटवर्किंग साइट्स शिक्षक छात्र संबंधों को नए तरीकों से बढ़ावा देती हैं और उन्हें अधिक संवेदनशील बनाती हैं।

इस अध्ययन का उद्देश्य है कि हम सोशल नेटवर्किंग साइट्स के उपयोग से शिक्षक और छात्र संबंधों पर गंभीर प्रभावों को जानें और उन्हें उनकी शिक्षा के लिए सकारात्मक तरीके से प्रयोग करने के लिए उपयोगी सुझावों को प्रस्तावित करें। शिक्षक और छात्र के संबंधों में सोशल नेटवर्किंग साइट्स का उपयोग आधुनिक शिक्षा के लिए एक व्यावहारिक मुद्दा बन गया है। इस अध्ययन के

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 6, Issue 02, July 2023

माध्यम से, हम सोशल नेटवर्किंग साइट्स के शिक्षक–छात्र संबंधों पर उसके प्रभाव को जानने का प्रयास करेंगे।

पूर्ववर्ती अध्ययनों ने सोशल नेटवर्किंग साइट्स के उपयोग से शिक्षक–छात्र संबंधों में कुछ महत्वपूर्ण फायदे बताए हैं, जो निम्नलिखित हैं–

संचारः सोशल नेटवर्किंग साइट्स के माध्यम से शिक्षक और छात्र एक दूसरे से संचार कर सकते हैं जो उन्हें अन्य तरीकों से नहीं मिलता है। यह आपसी संबंधों को मजबूत करता है और छात्रों को शिक्षकों के साथ संवाद करने के लिए उत्साहित करता है।

अध्ययन सामग्री का साझाकरणः सोशल नेटवर्किंग साइट्स के माध्यम से शिक्षक अपनी अध्ययन सामग्री को छात्रों के साथ साझा कर सकते हैं और छात्र भी उसी समय उससे संबंधित प्रश्न पूछ सकते हैं। इसके उपयोग के द्वारा शिक्षक होमवर्क पोस्ट करने तथा समूह चर्चाओं को सुविधाजनक बनाने के लिए कर सकता हैद्य इसके अलावा शिक्षक छात्रों की अध्ययन सामग्री को देख सकते हैं और उनकी प्रगति को देखते हुए उन्हें सुझाव भी दे सकते हैं।

नैतिकताः शिक्षक सोशल नेटवर्किंग साइट्स का उपयोग करके छात्रों को नैतिकता की शिक्षा दे सकते हैं। इसे लेकर उन्हें अलग–अलग आधार बनाने में सहायता मिलती है और वे छात्रों के बीच नैतिकता के मुद्दों पर उनकी गलतियों को संशोधित करने के लिए उन्हें सलाह दे सकते हैं।

विद्यार्थी के स्वरूप और प्रवृत्ति को समझनाः सोशल नेटवर्किंग साइट्स का उपयोग करके शिक्षक छात्रों के स्वरूप और उनकी प्रवृत्ति को समझ सकते हैं। उनके पोस्ट्स, ट्वीट्स और अन्य सामग्री से शिक्षक उनकी सोच के बारे में अधिक जान सकते हैं और इसके अनुसार उन्हें सहयोग प्रदान कर सकते हैं। हालांकि, शिक्षक–छात्र संबंधों में सोशल नेटवर्किंग साइट्स का उपयोग निरंतर विवादों का विषय रहा है। कुछ अध्ययनों के अनुसार, शिक्षक–छात्र संबंधों में सोशल नेटवर्किंग साइट्स का उपयोग छात्रों की अभिव्यक्ति छमता को कम कर सकता है और उन्हें असंतोषजनक बना सकता है।

सोशल नेटवर्किंग साइट्स के अत्यधिक उपयोग के साथ, आजकल छात्र पुस्तकों, पत्रिकाओं या नोट्स में जानकारी और ज्ञान प्राप्त करने के बजाए इस तरह के प्लेटफार्म पर अधिक सक्रिय रहते हैंद्य जिससे उनमें पढ़ने की आदतें और सीखने का कौशल कहीं न कहीं कम हो रहा हैद्य एक और मुद्दा यह है कि कुछ छात्रों को सोशल नेटवर्किंग साइट्स के उपयोग से विस्तारित विचारों और अवधारणाओं का पता लगता है जो उनके अध्ययन और समझ में नहीं होते हैं। इससे उन्हें गलत या असंगत जानकारी मिलती है जो उनके अध्ययन को अधिक मुश्किल बनाती है। शिक्षक–छात्र संबंधों पर सोशल नेटवर्किंग साइट्स के प्रभावों के अलावा, इसके कुछ नकारात्मक पहलुओं को भी ध्यान में रखना आवश्यक है।

पहला नकारात्मक पहलू है कि सोशल नेटवर्किंग साइट्स का उपयोग छात्रों की अभिव्यक्ति को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकता है। छात्र अक्सर अपने शिक्षकों और सहपाठियों के सामने एक अलग पहलू रखना चाहते हैं, जो उन्हें सोशल नेटवर्किंग साइट्स पर नहीं बताना चाहिए।

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 6, Issue 02, July 2023

यह अक्सर उनके शिक्षक और सहपाठियों के साथ रिश्तों को तनाव में डाल सकता है और उन्हें असंतुष्ट कर सकता है।

दूसरी नकारात्मक बात यह है कि सोशल नेटवर्किंग साइट्स छात्रों को कुछ ऐसे विचारों और अवधारणाओं से परिचित करवाते हैं, जो उनके अध्ययन और समझ के अनुकूल नहीं होती हैं। इससे कई बार उन्हें गलत जानकारी भी मिलती है जो उनके अध्ययन को अधिक मुश्किल बनाती है।

तीसरी नकारात्मक बात यह है कि सोशल नेटवर्किंग साइट्स के उपयोग से छात्रों का ध्यान भटक सकता है और उनके अध्ययन में व्यवधान उत्पन्न हो सकता हैद्य इसके अलावा, सोशल नेटवर्किंग साइट्स पर छात्रों का समय भी बर्बाद हो सकता है, जो उनके अध्ययन और उनके अन्य गतिविधियों पर असर डाल सकता है।

चौथी नकारात्मक बात यह है कि सोशल नेटवर्किंग साइट्स के अत्यधिक उपयोग से मानसिक विकार उत्पन्न होने का खतरा होता है द्य मानसिक विकार से ग्रसित छात्रों में चिंता, तनाव, अवसाद और नींद की कमी आदि व्याधियाँ देखनें को मिलती हैं जो छात्र जीवन के लिए अत्यंत चिंता का विषय है। इसलिए, सोशल नेटवर्किंग साइट्स का उपयोग जहाँ शिक्षक–छात्र संबंधों के विकास के लिए उपयोगी हो सकता है, वहीं यह छात्रों के लिए नकारात्मक भी हो सकता है। इसलिए, सोशल नेटवर्किंग साइट्स का उपयोग समझदारीपूर्वक किया जाना चाहिए।

सुझाव– इस अध्ययन के आधार पर, हम कुछ सुझाव प्रस्तुत कर रहे हैं जो शिक्षक और छात्र संबंधों पर सोशल नेटवर्किंग साइट्स के उपयोग के सकारात्मक प्रभावों को बढ़ावा देने में मदद कर सकते हैं–

सोशल नेटवर्किंग साइट्स का सकारात्मक उपयोग करें: शिक्षकों को अपने छात्रों के साथ सोशल नेटवर्किंग साइट्स पर सकारात्मक विचारों को साझा करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। इससे छात्रों के संचार में सुधार होगा और इससे उनकी शिक्षा में सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।

सोशल नेटवर्किंग साइट्स के विषय में शिक्षा दें: शिक्षकों को अपने छात्रों को सोशल नेटवर्किंग साइट्स के उपयोग के बारे में जागरूक करना चाहिए। वे छात्रों को सोशल मीडिया पर उचित विचारों वाले पोस्ट करने, आपसी संवाद में सही तरीके से संचार करने और अन्य शिक्षाप्रद उपयोगों के बारे में शिक्षित करने के लिए प्रेरित कर सकते हैं। सोशल नेटवर्किंग साइट्स के माध्यम से बहुत सी ऐसी सूचनाएं हमारे सामने प्रदर्शित होती हैं जो कि सच नहीं होती ऐसी झूठी सूचनाओं से हमें सतर्क रहना चाहिए।

संयुक्त अभियानों का उपयोग करें: शिक्षक और छात्रों को संयुक्त अभियानों के अंतर्गत समूह बनाने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए जो सोशल नेटवर्किंग साइट्स पर अपनी सीमाएँ बढ़ा सकते हैं। इस तरह के अभियानों में संमलित होने से छात्र सोशल–नेटवर्किंग साइट्स के सकारात्मक उपयोग के बारे में सीखने के लिए उत्साहित होते हैं।

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 6, Issue 02, July 2023

सोशल–नेटवर्किंग साइट्स का सीमित उपयोगः शिक्षकों को सुनिश्चित करना चाहिए कि छात्र सोशल–नेटवर्किंग साइट्स का सीमित उपयोग करें जो उन्हें सीधे और उत्पादक एवं सकारात्मक रूप से उनकी शिक्षा के लिए उपयोगी होंद्य इसका उपयोग करते करते कहीं न कहीं छात्र ब्राउज करते करते अध्ययन के अलावा दूसरी साइट्स पर पहुँच जाते हैं जिससे उनका अमूल्य समय बर्बाद हो जाता है।

ऑनलाइन सुरक्षा अभियानः शिक्षकों को सुनिश्चित करना चाहिए कि उनके छात्र सोशल नेटवर्किंग–साइट्स का सुरक्षित उपयोग कर रहे हैं, उन्हें इस पर निगरानी करनी चाहिए और उनके उपयोग को सीमित करना चाहिए जिससे कि यह हमारे जीवन पर हावी न हो पाए।

परिणाम और उनका विश्लेषण– इस अध्ययन के आधार पर हम सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव दोनों को देखते हुए इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि सोशल नेटवर्किंग–साइट्स के शिक्षक–छात्र संबंधों पर सकारात्मक प्रभाव ज्यादा होते हैं। इन साइट्स के माध्यम से शिक्षक–छात्र दोनों के बीच संचार का माध्यम उपलब्ध होता है। छात्र–शिक्षकों से अपनी शिक्षा से संबंधित किसी भी प्रश्न के संबंध में पूछ सकते हैं और उन्हें उचित सुझाव और सलाह प्राप्त हो जाती है। इसके अलावा, छात्र शिक्षकों से अपनी उपस्थिति, कक्षाओं और पाठ्यक्रम के संबंध में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। इस तरह के सकारात्मक प्रभावों के अलावा, सोशल नेटवर्किंग साइट्स शिक्षकों को भी फायदे पहुंचाती हैं। वे अपने छात्रों के साथ उचित समय पर पाठ्यक्रम और अन्य शैक्षिक जानकारी साझा कर सकते हैं।

सोशल नेटवर्किंग साइट्स वरदान और अभिशाप दोनों ही है यह शिक्षक और छात्र दोनों पर निर्भर करता है कि वह इसका किस तरह से उपयोग करता हैद्य सोशल नेटवर्किंग साइट्स के उपयोग के समय, शिक्षक और छात्र दोनों को सतर्क रहना चाहिए। छात्रों को समय–समय पर उपयोग करने से रोका जाना चाहिए और उन्हें यह भी सिखाना चाहिए कि कैसे वे साइटों का उपयोग करते समय उससे होने वाले नुकसान से बच सकते हैं। साथ ही, शिक्षकों को भी सोशल नेटवर्किंग–साइट्स के उपयोग के बारे में जानना चाहिए ताकि वे उन्हें अधिक संवेदनशील ढंग से समझ सकें और प्रयोग कर सकें। शिक्षक और छात्र दोनों को यह भी समझना चाहिए कि सोशल नेटवर्किंग–साइट्स के उपयोग से फायदा तो हो सकता है, लेकिन ये खतरनाक भी हो सकती हैं। इन साइट्स का उपयोग शिक्षक और छात्र अपनी शिक्षा प्रक्रिया को बेहतर बनाने के लिए करें और इसे अपने जीवन पर नियंत्रण न करने दें।

संदर्भ–

1. अमिता जैन, महाविद्यालय स्तर के विद्यार्थियों पर सो'ाल मीडिया के प्रभाव का अध्ययन, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन, मॉडर्न मैनेजमेंट, अप्लाइड साइंस एण्ड सोशल साइंस, 1(4), 2019, 47–50
2. नियाल मैककैरॉल एवं केविन करेन, सोशल नेटवर्किंग इन एजुकेशन, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इनोवेशन इन डिजिटल एकोनॉमी, 4(1), 2015, 1–15

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 6, Issue 02, July 2023

3. आर मैसन एवं एफ रेनी, ई लर्निंग एण्ड सोशल नेटवर्किंग हैन्ड्बुक फॉर हायर एजुकेशन, (प्रथन संस्करण), न्यूयॉर्क, एन वाई , रूटलेज, 2018
4. पिंटू रंजन प्रसाद, माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के व्यक्तित्व और समायोजन पर सोशल मीडिया का प्रभाव, अपनी माटी, 2022
5. संतोष नरुका एवं विजय लक्ष्मी शर्मा, सोशल मीडिया एनफ्लूएन्स ऑन यूथ, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंजीनियरिंग एण्ड रिसर्च, 6(1), 2018, 292–296
6. प्रांजल शर्मा एवं मनीष जैन, सोशल मीडिया का उच्चतर माध्यमिक शाला के विद्यार्थियों पर प्रभाव का एक अध्ययन, शोध संगम, 5(3), 2022, 822–830